शिक्षा को मानवीकरण करने सह अस्तित्व में पाए जाने वाली मूल भूत अध्ययन गम्य वस्तुएं -

① अध्ययन करने वाला मानव

② अध्ययन प्रक्रिया - निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण।
(ईक्षण का तात्पर्य देखना, देखने का तात्पर्य समझना)

③ मनुष्य समझ कर ही, सम्पूर्ण कार्य करता है।

④ प्रमाण का स्वरूप - प्रयोग, व्यवहार व अनुभव सिद्ध तथ्य व परिणाम। अनुभव ही प्रमाण परम है।

⑤ ~~अस्तित्व में~~ मानव अध्ययन व अनुभव ~~गम्य~~ करने के लिए:- ~~वस्तु के दर्शन के रूप में~~ -
- (i) अस्तित्व
- (ii) अस्तित्व में विकास
- (iii) अस्तित्व में जीवन
- (IV) अस्तित्व में जीवन जागृति
- (V) अस्तित्व में भौतिक रासायनिक रचना ~~विरचना~~ विरचना।

'अस्तित्व ही सह अस्तित्व'

⑥ सह अस्तित्व में - अध्ययन के लिए विचार शैली -
- समाधानात्मक भौतिकवाद
- व्यवहारात्मक जनवाद
- अनुभवात्मक अध्यात्मवाद.

⑥ मानव भाषा सूत्र -
कारण, गुण, गणित का अविभाज्य संप्रेषण प्रक्रिया।

⑧ सह अस्तित्व में मानव - जीने की कला के अर्थ में शास्त्र का अध्ययन -

- आवर्तनशील अर्थ चिंतन
- व्यवहारवादी जन चेतना (मानवीय आचार संहिता)
- मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

- जिसके फलस्वरूप प्रामाणिकता सहित स्वानुशासन रूपी स्वतंत्रता, न्याय; उत्पादन विनिमय सुलभता रूपी स्वराज्य सर्व सुलभ होना है।

विकल्पात्मक

⑨ चिंतन का स्वरूप –

- अस्तित्व मूलक, मानव केन्द्रित चिंतन।

- विश्व दृष्टिकोण का आधार –

अस्तित्व ही सह अस्तित्व, प्रतिष्ठा में नित्य वर्तमान होना –"

× × × ×

मानवीय शिक्षा में –

(१)- मनुष्य को सर्वाधिक विकसित के रूप में पहिचानना

(२) मनुष्य को दृष्टा पद में पहिचानना

(३) " अस्तित्व समग्र का दृष्टा होने की पहिचान

(४) " संस्कारानुषंगीय वर्तमान के रूप में पहिचान

(५) " शुभेच्छु के रूप में पहिचान।

(६) " सौंदर्य बोध करने वाले के रूप में पहिचान।

(७) " अस्तित्व रूपी सत्य में अनुभव करने योग्य इकाई के रूप में पहिचान।

(८) " जीवन जागृति क्रम में निष्ठान्वित होने के रूप में पहिचान।

(९) " निर्भ्रम होने के इच्छुक के रूप में पहिचान।

(१०) " सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न होने योग्य इकाई के रूप में पहिचान।

(११) मनुष्य का - मनुष्य मनुष्य का द्रष्टा पद में पहिचान।
(१२) " कर्म स्वतंत्र, कल्पनाशील के रूप में पहिचान।
(१३) " कर्म करते समय स्वतंत्र, फल भोगते समय परतंत्र के रूप में पहिचान।
(१४) " सही कार्य व्यवहार करने के इच्छुक के रूप में पहिचान।
(१५) " नियम पूर्वक सुखी; न्याय पूर्वक शांति, समाधान पूर्वक संतोष तथा प्रामाणिकता पूर्वक आनंद को अनुभव करने वाले के रूप में पहिचान
(१६) " स्वतंत्रता व स्वराज्य के प्यासा के रूप में पहिचान।
(१७) " स्वानुशासन, (स्वराज्य) स्वराज्य, विवेक, विज्ञान का अविभाज्य प्रकाशन के रूप में पहिचान।
(१८) " मानवत्व सहित सार्वभौम व्यवस्था के रूप में पहिचान।
(१९) " मानव, संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में ~~ऊर्जित~~ अर्पित प्रमाणित होने के ~~योग्य इकाई के रूप~~ रूप में में पहिचान।
(२०) " बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि, अभय अर्थात वर्तमान में विश्वास और सह-अस्तित्व में ही सामाजिक होने के रूप में पहिचान।

मानवत्व सहित सार्वभौम व्यवस्था के रूप में पहिचान अपरिहार्य है।